साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

वर्ष : 10, अंक : 4 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 11 सितंबर 2024 से 17 सितंबर 2024 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

क्षिप्रा नदी को निर्मल एवं प्रवाहमान बनाये रखने सेवरखेड़ी-सिलारखेड़ी परियोजना के लिए 614 करोड़ 53 लाख रूपये की प्रशासकीय स्वीकृति

इन्दौर (नगर प्रतिनिधि) मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक मंत्रालय में हुई। मंत्रि-परिषद द्वारा 614 करोड़ 53 लाख रुपये से सेवरखेड़ी-सिलारखेड़ी परियोजना का निर्माण कराये जाने का निर्णय लिया गया। निर्णय अनुसार सिलारखेड़ी जलाशय की ऊँचाई बढ़ायी जाकर जलाशय की जल संग्रहण क्षमता में वृद्धि की जायेगी। परियोजना में संग्रहित जल से क्षिप्रा नदी को निर्मल प्रवाहमान बनाये रखने तथा चितावद वृहद परियोजना में जल को संग्रहित किया जाकर लगभग 65 ग्रामों की 18 हजार 800 हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध हो सकेगी।

डोकरीखेड़ा जलाशय के शेष कमाण्ड एरिया को पिपरिया शाखा नहर से जल उदवहन कर दाबयुक्त सूक्ष्म सिंचाई पद्धति से सिंचित करने पुनरीक्षित प्रशासकीय स्वीकृति मंत्रि-परिषद द्वारा नर्मदापुरम जिले की डोकरीखेड़ा जलाशय के शेष कमाण्ड एरिया को पिपरिया शाखा नहर से जल उदवहन कर सूक्ष्म सिंचाई पद्धति के लिए 49 करोड़ 94 लाख रुपये, सैंच्य क्षेत्र 2940 हेक्टेयर की पुनरीक्षित प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई। पिपरिया शाखा नहर की लाईनिंग के पश्चात शेष जल के उपयोग करने के लिए परियोजना का सैंच्य क्षेत्र 2000 हेक्टेयर से बढ़ाकर कुल 12 ग्रामों की 2940 हेक्टेयर क्षेत्र में रबी सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई जा सकेगी। मंत्रि-परिषद द्वारा भारतमाला परियोजना अंतर्गत तहसील पीथमपुर, जिला धार में मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक पार्क की स्थापना अंतर्गत प्रभावित ग्राम जामोदी की भूमि की कलेक्टर गाईडलाईन कम होने के कारण ग्राम जामोदी के किसानों को प्राप्त मुआवजा राशि के अंतर की राशि का स्पेशल पैकेज प्रदान किये जाने की स्वीकृति दी गई। स्वीकृति अनुसार ग्राम जामोदी के समस्त 85 भू-धारक के लिए अन्य ग्रामों की भूमि की तुलना में भूमि की कलेक्टर गाईडलाईन कम होने के कारण अंतर की राशि 24 लाख रुपये प्रति हेक्टेयर की दर से 63.581 हेक्टेयर भूमि दोगुना मुआवजा प्रदान किये जाने के लिए राशि रुपये 30 करोड़ 52 लाख का स्पेशल पैकेज प्रदान किया जायेगा एवं 15 करोड 26 लाख (रु 30 करोड 52 लाख का 50 प्रतिशत) का भार राज्य शासन द्वारा वहन किया जायेगा। यदि भविष्य में स्पेशल पैकेज के अतिरिक्त ब्याज आदि किसी अन्य मद में किसी भी प्रकार का कोई अतिरिक्त वित्तीय भार आता है, उसका वहन एमपीआईडीसी लि. एवं एनएचएलएमएल द्वारा समान रूप से किया जायेगा।

जलवायु परिवर्तन के बीच दुधारू पशु की तैयार होगी नई नस्ल, NDRI ने जीन में फेरबदल कर विकसित किया भ्रूण

'इस प्रकार जीन में फेरबदल के जरिये नए नस्ल के पशुओं से दुग्ध उत्पादन शुरू होने में 4 से 5 साल लगते हैं। उसके बाद हमें पता चल पाएगा कि वह नस्ल जलवायु के प्रति कितना अनुकूल है। इसके लिए प्रतिष्ठित संस्थान एनडीआरआई जारी शोध अब अगले चरण में पहुंच जाएगा जहां भ्रूण को कटड़ी (पड़िया) के रूप में विकसित करने के लिए किसी भैंस में डाला जाएगा। शोधकर्ताओं ने क्लस्टर्ड रेगुलरली इंटरस्पेस्ड शॉर्ट पैलिंड्रोमिक रिपीट्स (सीआरआईएसपीआर) तकनीक के जरिये जीन में फेरबदल किया है। यह तकनीक जीन में लक्षित बदलाव के लिए किसी भी डीएनए अनुक्रम में सटीक फेरबदल करने में समर्थ बनाती है। एनडीआरआई के निदेशक धीर सिंह ने संवाददाताओं से कहा, 'भ्रूण के विकसित होकर कटड़ी पैदा होने और उसके बाद उसे दूध देने की अवस्था तक पहुंचने के बाद ही हमें पता चल पाएगा कि उसकी दुग्ध उत्पादन क्षमता जलवायु परिवर्तन के अनुकूल है या नहीं।' सिंह ने बताया कि कोई पशु सामान्य परिस्थितियों में भ्रूण से दूध देने की अवस्था तक पांच साल में पहुंच सकता है। अब भ्रूण विकसित हो चुका है और उसे किसी भैंस के गर्भाशय में प्रतिरोपित जाएगा। उसके बाद भ्रूण को कटड़ी के रूप में विकसित होने में करीब एक साल का समय लगेगा। कटड़ी के जन्म के बाद उसे परिपक्व होने में 2 से 3 साल और लगेंगे। उसके बाद गर्भधारण और दुग्ध उत्पादन में एक साल और लगेगा। सिंह ने बताया, 'इस प्रकार जीन में फेरबदल के जरिये नए नस्ल के पशुओं से दुग्ध उत्पादन शुरू होने में 4 से 5 साल लगते हैं। उसके बाद ही हमें पता चल पाएगा कि वह नस्ल जलवायु के प्रति कितना अनुकूल है।' सिंह ने कहा कि 'थारपारकर' जैसी गाय की कुछ नस्लें प्राकृतिक रूप से गर्मी के प्रति सहनशील होती हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण उनके दुग्ध उत्पादन पर कोई असर नहीं पड़ता है। अगर उनके इस गुण के लिए जिम्मेदार जीन की मैपिंग की जाए तो उसका उपयोग उन मवेशियों में किया जा सकता है जो जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशील होते हैं। थारपारकर नस्ल की गाय आम तौर पर राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में पाई जाती है। दुनिया का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश भारत लगातार जलवायु परिवर्तन की मार झेल रहा है। इससे दुधारू पशुओं की उत्पादकता में कमी आ रही है। इस बीच, एनडीआरआई ने सीआरआईएसपीआर तकनीक के जरिये बीटा लैक्टोग्लोबुलिन (बीएलजी) जीन को लक्षित करने वाले जीन के साथ भ्रूण भी विकसित किए हैं। इस शोध का उल्लेख नेचर समूह की एक प्रतिष्ठित पत्रिका साइंटिफिक रिपोर्ट्स में किया गया है। बीएलजी जीन दूध के उत्पादन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह जीन विशेष रूप से अन्य दुग्ध प्रोटीन के साथ अंत:क्रिया को प्रभावित करता है और मनुष्यों में एलर्जी का कारण बनता है।

पर्यावरण को स्वच्छ बनाने में नप नालागढ़ को मिला तीसरा पुरस्कार

बद्दी(सोलन)। नालागढ़ क्षेत्र के वायु प्रदूषण में सुधार होने पर केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय ने नप नालागढ़ व प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को सम्मानित किया है। जयपुर में अंतरराष्ट्रीय क्लीन एयर डे पर आयोजित कार्यक्रम में नालागढ़ को देश में तीसरा स्थान मिला है। पुरस्कार के रूप में नालागढ़ को 12.50 लाख रुपये नकद पुरस्कार मिला है। कार्यक्रम में राजस्थान के मुख्यमंत्री व केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव से पुरस्कार राशि का चेक नप नालागढ़ के ईओ आरएस वर्मा व पार्षद महेश गौतम ने प्राप्त किया।

नालागढ़ क्षेत्र का वायु प्रदूषण पहले मॉडरेट श्रेणी में था लेकिन पिछले काफी माह से यह सेफ जोन में आ रहा था। 2 सितंबर को एयर क्वालिटी इंडेक्स सेटिस्फेक्टरी श्रेणी में रहा। एयर क्वालिटी इंडेक्स बेहतर श्रेणी में होने के बाद यहां के पीएम-10, पीएम 2.5, एसओ-3, एनओ एक्स, सीओ, ओ-3 व एनएच-3 भी कम हुआ है। औद्योगिक क्षेत्र होने के बावजूद भी पर्यावरण संरक्षण में नालागढ़ नगर परिषद ने बेहतर कार्य किया। नगर परिषद के कार्यकारी अधिकारी आरएस वर्मा ने बताया नप ने एयर प्रदूषण को कम करने के लिए प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के साथ अच्छा काम किया। सड़कों के किनारे वाहनों से उड़ने वाली धूल को कम किया। बंजर जमीन पर पौधरोपण किया गया। खुले में कूड़ा नहीं डाला गया। कई बार लोग कूड़ा सीधा जला देते हैं, उस पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगाया गया। इन सब कारणों से यहां पर पर्यावरण प्रदूषण कम हुआ और नालागढ़ नप को देश में तीसरा स्थान प्राप्त मिला। कहा कि एक साल में प्रदूषण को नालागढ़ से और कम करने की योजना बनाई जा रही है।

पांडुपोल हनुमान मंदिर पहुंचे केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव, की पूजा-अर्चना

पांडुपोल केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव एवं वन राज्यमंत्री संजय शर्मा ने आज 9 सितंबर को प्रातः 9 बजे पांडुपोल हनुमान जी मंदिर में पूजा-अर्चना की एवं मेले के शुभारंभ समारोह में भाग लिया. केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव आज अलवर पहुंचे. इसके बाद सीधे वह वन मंत्री संजय शर्मा के साथ पांडुपोल हनुमान जी महाराज के मंदिर पहुंचे. पहले तो सरिस्का गेट पर सरिस्का अधिकारियों द्वारा स्वागत किया गया. इसके बाद वह जिप्सी के माध्यम से सरिस्का के वादियों में स्थित पांडुपोल हनुमान मंदिर पहुंचे. जहां उनका स्वागत किया गया और हनुमान जी की दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया.

उनके साथ भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष संजय नरूका, पूर्व विधायक जय राम जाटव सहित अनेक पदाधिकारी मौजूद थे. उन्होंने मंदिर में पहुंचकर हनुमान जी के धोक लगाई और देश की उन्नति के लिए पूजा अर्चना कर मंगल कामना की. इस मौके पर मंदिर कमेटी द्वारा यहां की समस्याओं के संबंध में भी चर्चा की गई. इस पर उन्होंने कहा कि शीघ्र इस पर अंतिम निर्णय लिया जाएगा कि पांडुपोल आने वाले किसी भी भक्तों को कोई परेशानी नहीं हो. पांडुपोल का मेला 10 सितंबर को भरेगा, जिसमें जिला प्रशासन द्वारा भी अवकाश रखा जाता है. प्रशासन द्वारा पूरी व्यवस्था की जाती है. इस दरम्यान उनके साथ वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री संजय शर्मा पूर्व विधायक जयराम जाटव, पूर्व विधायक बनवारी लाल सिंघल सहित भाजपा के पदाधिकारी सरिस्का फील्ड डायरेक्टर संग्राम सिंह, कटिहार डीएफओ अभिमन्यु सारण, रेंजर पुलिस विभाग की ओर से पुलिस उपाधीक्षक ग्रामीण डॉक्टर पूनम चौहान, थाना अधिकारी अकबरपुर ओम प्रकाश शाहिद वन्य कर्मी मौजूद रहे.

पर्यावरण संरक्षण को लेकर दो दिन होगा मंथन

जोधपुर, । जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के गुरु जंभेश्वर पर्यावरण संरक्षण शोधपीठ और जांभानी साहित्य अकादमी बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में शहर में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन 11 और 12 सितम्बर को मारवाड़ इंटरनेशनल सेंटर राजकीय पॉलीटेक्निक कॉलेज में होगा। इसमें देश और प्रदेश के पर्यावरण प्रेमी हिस्सा लेंगे। वे वन और पर्यावरण संरक्षण से संबंधित मूल्यों को लेकर चर्चा करेंगे। सम्मेलन के तहत जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के नया परिसर स्थित पर्यावरण व खेजड़ी के लिए जान देने वाले अमृता देवी की मूर्ति का अनावरण किया जाएगा। जंभेश्वर पर्यावरण संरक्षण शोधपीठ जयनारायण व्यास यूनिवर्सिटी के डॉ. ओमप्रकाश बिश्नोई ने बताया कि दो दिन के इस कार्यक्रम में कुल 7 सत्र होंगे जिसमें वर्तमान में हो रहे प्राकृतिक संसाधनों की कमी, पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु प्रदूषण आदि विषयों पर चर्चा की जाएगी। इसके अलावा शोधपीठ की ओर से हर साल दिए जाने वाले तीन पुरस्कार भी दिए जाएंगे। कार्यक्रम में राजस्थान सरकार के कई मंत्री और स्थानीय जनप्रतिनिधि सहित विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ भी शामिल होंगे। सम्मेलन को लेकर तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। कार्यक्रम में आने वाले समय में हो रहे जलवायु परिवर्तन और नष्ट हो रहे पर्यावरण को बचाने को लेकर क्या किया जा सकता है। इन विषयों पर मंथन किया जाएगा। इसके अलावा वायु प्रदूषण कम करने, प्राकृतिक चीजों को सहेजने और आने वाले समय में पर्यावरण के लिए होने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए किस प्रकार के कदम उठाए जाए इन विषयों पर चर्चा की जाएगी।

एनजीटी के निर्देशों की अनदेखी पर होगी कार्रवाई - हर्षित कुमार

भिवानी (एजेंसी)। एडीसी एवं जिला नगर आयुक्त हर्षित कुमार ने सभी होटल, रेस्टोरेंट, बैंक्वेट हॉल, धर्मशाला संचालकों को कचरा प्रबंधन के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा सभी संचालक अपने संस्थानों में एनजीटी के निर्देशों की पालना करें। निर्देशों की पालना न करने वालों पर नियमानुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा है कि एनजीटी के निर्देशानुसार होटल, रेस्टोरेंट, बैंक्वेट हॉल, धर्मशालाओं में कचरा प्रबंधन होना चाहिए। इसके तहत संस्थान से निकलने वाले कचरे का उसी परिसर में उचित प्रबंधन करना होता है, तथा कचरे को बाहर नहीं फेंका जा सकता। उन्होंने बताया कि विवाह या अन्य समारोह के दौरान इन संस्थाओं से भारी मात्रा में कचरा निकलता है। यदि यह कचरा बाहर खुले में डाल दिया जाता है तो उसके गंदगी को आलम बन जाता है, जिससे पर्यावरण अशुद्ध होता है।

ओवरस्पीड में वाहन चालकों के करें चालान-डीसी

भिवानी। उपायुक्त महावीर कौशिक की अध्यक्षता में लघु सचिवालय परिसर स्थित डीआरडीए सभागार में रोड सेफ्टी की समीक्षा बैठक आयोजित हुई। बैठक में उपायुक्त कौशिक ने यातायात पुलिस को निर्देश दिए कि ओवरस्पीड में चलने वाले वाहन चालकों के चालान करें। उन्होंने दुपहिया पर थ्री राइडिंग के भी चालान करने के निर्देश दिए। इसके अलावा शहर में इन जगहों पर विशेष निगरानी की जाए जहां पर युवा वर्ग मोटरसाइकिल या कार से स्टंट करते हैं। ऐसा करने वालों पर भी यातायात नियमों के तहत सख्त कार्रवाई हो। उपायुक्त ने कहा कि बिना हेलमेट पहने दुपहिया वाहन चालक मौत का शिकार होते हैं। बिना हेलमेट दुपहिया वाहन चालकों व ओवर स्पीड वाहन चालकों के अधिक से अधिक चालान किए जाएं। उन्होंने निर्देश दिए कि स्कूल बस में सीसीटीवी कैमरा, बस की स्पीड 55 किलोमीटर प्रति घंटा से अधिक न हो, फायर सिलेंडर होना चाहिए, फर्स्ट एड बॉक्स, बस के साइड में तीन-तीन सेफ्टी ग्रील होन चाहिए, बच्चों को बस में उतारने व चढ़ाने के दौरान एक सहायक जरूर होना चाहिए। इस दौरान आरटीओ मनोज कुमार ने रोड सेफ्टी के बारे में समीक्षा रिपोर्ट प्रस्तुत की। बैठक में सिविल सर्जन डॉ. रघुवीर शांडिल्य, उप पुलिस अधीक्षक अनूप कुमार सहित संबंधित विभागों से अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

गैसलाइट से लेकर विद्युतीकरण तक- कृत्रिम प्रकाश की यात्रा

नई दिल्ली। हमारे अतीत के अधिकांश कालखंड में कृत्रिम प्रकाश ने रात के अंधेरे में खलल नहीं डाला। वर्ल्ड एट नाइट रिपोर्ट के अनुसार, 17वीं शताब्दी से पहले स्ट्रीट लाइट का अस्तित्व नहीं था। इंपीरियल रोमन और यहां तक कि पुनर्जागरण फ्लोरेंस में भी स्ट्रीट लाइट की व्यवस्था नहीं थी। डच चित्रकार रेम्ब्रांट की प्रसिद्ध पेंटिंग में दिखाया गया है कि अंधेरे में कानून-व्यवस्था रात में पहरे द्वारा सुनिश्चित की जाती थी।

घर के बाहर रोशनी की व्यवस्था मुश्किल से 200 साल से कुछ अधिक पुरानी है। पहली बाहरी रोशनी 1600 के दशक में तब हुई, जब सुरक्षा और व्यापारिक कारणों से कुछ यूरोपीय और अमेरिकी शहरों में घर के मालिकों को खिड़कियों पर एक तेल का दीपक या मोमबत्ती रखने की आवश्यकता पड़ी। इसने शाम को सामाजिक संपर्क का एक नया युग शुरू किया। इसका नतीजा यह निकला कि प्रकाश की तीव्र इच्छा प्रबल हुई। रिपोर्ट के मुताबिक, तेल के लैंप केवल सीमित रोशनी प्रदान करते थे, लेकिन 19वीं शताब्दी की शुरुआत में ब्रिटेन और अमेरिका में गैसलाइट की शुरुआत से दृश्य बदल गया। 2017 में एथिक्स, पॉलिसी एंड एनवायरमेंट जर्नल में प्रकाशित टेलर स्टोन के अध्ययन लाइट पॉल्यूशन = ए केस स्टडी इन फ्रेमिंग एन एनवायरमेंट प्रॉब्लम में मानते हैं कि गैसलाइट को अपनाने और उसके प्रसार के साथ ही रात में आधुनिक शहर की धारणा उभरने लगी और रातें निश्चित रूप से अधिक रोशन होने लगीं। गैसलाइट का पहली बार सार्वजनिक प्रदर्शन 1807 में लंदन में किया गया था और अगले कुछ दशकों में इसे यूरोप और उत्तरी अमेरिका में तेजी से अपनाया गया। वर्ल्ड एट नाइट रिपोर्ट की मानें तो 1870 के दशक तक विद्युतीकरण शुरू हो गया था और सार्वजनिक स्थानों पर कृत्रिम प्रकाश की व्यवस्था आर्क लैंप के जरिए हुई। यह लैंप, गैसलाइट की तुलना में कम लागत पर तेज सफेद रोशनी पैदा करते थे। सड़कों पर इनके लगने और वाहनों के चलने से चकाचौंध की समस्या पैदा होने लगी। प्रदूषण के रूप में प्रकाश व्यवस्था पर चिंता 19वीं सदी के अंत से शुरू हुई, लेकिन 1970 के दशक में पर्यावरण आंदोलन और तेल संकट के मद्देनजर यह व्यापक हो गई। 2000 के बाद से प्रकाश व्यवस्था के मुद्दे रात में रोशनी के बेतहाशा बढ़ने के साथ फिर सुलगने लगे। स्लोवेनिया द्वारा 2007 में प्रकाश प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए दुनिया का पहला राष्ट्रीय कानून बनाने के बाद इस मुद्दे पर बहस ने जोर पकड़ा। अब दुनिया में प्रकाश प्रदूषण को पर्यावरण के प्रति गंभीर चिंता के रूप में देखा जाने लगा है। इसे नियंत्रित करने के लिए दुनिया के कई देशों में कानूनी पहल होने लगी है।

प्रकाश प्रदूषण के कारण मकड़ियों का सिकुड़ रहा है दिमाग- अध्ययन

न्यूयार्क (एसेंजी) जैसे ही अंधेरा छाता है रात में जागने वाले जीवों का एक तरह से दिन शुरू हो जाता है। निशाचर प्रजातियां लाखों सालों से रात के अंधेरे में जीवित रहने के लिए पूरी तरह से अनुकूल हैं। इन अंधेरे में रहने वाले जीवों के साथ क्या होता है जब रात में उनके घर पर स्ट्रीट लाइट या अन्य तरह की कृत्रिम रोशनी पड़ती है?

नए अध्ययन में, अध्ययनकर्ताओं ने इस बात का अध्ययन किया कि प्रकाश प्रदूषण ऑस्ट्रेलियाई गार्डन ऑर्ब वीविंग स्पाइडर या मकड़ियों के विकास को कैसे प्रभावित करता है। उन्होंने पाया कि यह उनके मस्तिष्क को छोटा बनाता है, विशेष रूप से आंखों वाले हिस्सों में जो उनके व्यवहार पर कई अज्ञात प्रभाव डालता है। कृत्रिम प्रकाश दुनिया को प्रदूषित करने के सबसे तेजी से बढ़ते तरीकों में से एक है और इसका जानवरों, पौधों और पारिस्थितिकी तंत्रों पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। हाल के साक्ष्य बताते हैं कि प्रकाश प्रदूषण के साथ रहने का तनाव कुछ पक्षियों और स्तनधारियों में मस्तिष्क के विकास को रोक सकता है। यह विनाशकारी हो सकता है। ऐसे नए वातावरण में जीवित रहने के लिए जहां प्रकाश प्रदूषण सबसे आम है, जैसे कि शहर, जानवरों को वास्तव में बड़े और अधिक जटिल मस्तिष्क की आवश्यकता हो सकती है। लेकिन रात्रिचर कीड़ों, मकड़ियों और अन्य छोटे जीवों के बारे में क्या? क्या प्रकाश प्रदूषण उनके मस्तिष्क की वृद्धि और विकास को भी प्रभावित कर सकता है? रात्रिचर ऑस्ट्रेलियाई गार्डन ऑर्ब वीविंग स्पाइडर या मकड़ियों पर किए गए अध्ययन से पता चलता है कि ऐसा होता है। ऑस्ट्रेलियाई गार्डन ऑर्ब वीविंग स्पाइडर इस सवाल का जवाब ढूढ़ने के लिए एक आदर्श प्रजाति है। यह शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में आराम से रहता है, जहां यह हर रात खुले इलाकों में अपना जाल बनाता है। पिछले अध्ययनों में पाया गया कि शहरी मकड़ियां जो स्ट्रीट लाइट के नीचे जाल बनाती हैं, वे अधिक कीटों का शिकार करती हैं। शोध में कहा गया है कि रात में प्रकाश की कीमत चुकानी पड़ती है क्योंकि यह किशोरों के विकास को तेज करता है, जिसके कारण छोटे वयस्क कम संतान पैदा करते हैं। बायोलॉजी लेटर्स नामक पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन में, इस सवाल का जवाब ढूढ़ने के लिए, शोधकर्ताओं ने ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न में अपेक्षाकृत अंधेरे पार्कों से किशोर मकड़ियों को लिया और उन्हें वयस्क होने तक प्रयोगशाला में पाला। पालन-पोषण के दौरान, आधी मकड़ियों को रात में अंधेरे में रखा गया और बाकी आधी को स्ट्रीट लाइट की चमक के बराबर रात की रोशनी में रखा गया। मकड़ियों के पूरी तरह से विकसित होने के कुछ सप्ताह बाद, शोधकर्ताओं के द्वारा मूल्यांकन किया गया कि क्या रात में प्रकाश ने उनके मस्तिष्क के विकास को प्रभावित किया है। क्योंकि मकड़ी का मस्तिष्क बॉलपॉइंट पेन की निब के आकार का होता है, जो कि एक घन मिलीमीटर से भी कम होता है, इसलिए शोधकर्ताओं ने अंदर क्या है, यह देखने के लिए माइक्रो-सीटी इमेजिंग तकनीक का इस्तेमाल किया। शोधकर्ताओं ने पाया कि रात में प्रकाश के थोड़े समय के संपर्क में आने से मकड़ी के मस्तिष्क का आकार कुल मिलाकर छोटा हो गया। सबसे मजबूत प्रभाव मकड़ी की प्राथमिक आंखों में देखने से जुड़े मस्तिष्क के इलाके में देखा गया। यह हो सकता है कि रात में प्रकाश के कारण एक तनावपूर्ण वातावरण बना जिसने विकास और वृद्धि से संबंधित हार्मोनल प्रक्रियाओं को रोक दिया। हालांकि अगर ऐसा होता, तो हम मस्तिष्क के सभी हिस्सों को प्रभावित होते हुए देखा जा सकता है।

यूएन वीमन और नोकिया ने प्रदेश शासन के साथ मेंटरिंग वूमेन, एम्पॉवरिंग फ्यूचर्स कार्यक्रम किया प्रारंभ

प्रदेश के 12 जनजाति बहुल जिलों की महिलाओं को किया जायेगा प्रशिक्षित

इंदौर यूएन वीमन इंडिया और नोकिया ने प्रदेश सरकार के साथ साझेदारी में %मेंटरिंग वूमेन, एम्पॉवरिंग फ्यूचर्स कार्यक्रम की शुरुआत की है। इसका उद्देश्य युवा महिला एवं छात्राओं को आवश्यक व्यावसायिक कौशल प्रदान करना है, ताकि वे बेहतर ढंग से प्रशिक्षित हो कर तकनीकी उद्योग के क्षेत्र में बेहतर कैरियर बना सकें। इसका उद्देश्य कार्यशालाओं और मेंटरशिप कार्यक्रम के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना है जिससे वे आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनकर देश के विकास में सहयोगी बने।

वर्ष 2024 में यह कार्यक्रम प्रदेश के 12 जनजाति बहुल जिलों में प्रारंभ किया गया है, जो %ड्ढद्गस्ञ्जश्वरू% कार्यक्रम का हिस्सा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (स्ञ्जश्वरू) के क्षेत्र में महिलाओं को सशक्त बनाना है। यह पहल उन युवा महिलाओं को प्रेरणा और समर्थन प्रदान करने पर केंद्रित है, जो पहले से ही मध्य प्रदेश के चयनित जनजाति बहुल क्षेत्र में उच्च शिक्षा या व्यावसायिक स्ञ्जश्वरूशिक्षा पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत हैं। कार्यक्रम का मुख्य आधार परामर्श और मार्गदर्शन है, जो महिलाओं को स्ञ्जश्वरू क्षेत्र में रोजगार प्राप्त करने और रोजगार में बने रहने में सहायता करता है। व्यापक और नवीनीकृत दृष्टिकोण से समूह मार्गदर्शन द्वारा मेंटरशिप जोड़ी बनाई जायेगी। छात्राओं को रिज्यूमे बनाना, साक्षात्कार की तैयारी, कॅरियर निर्माण, डिजिटल कौशल निर्माण, कंपनी में काम करना, व्यक्तिगत ब्रांडिंग, नेतृत्व और अन्य सॉफ्ट स्किल्स पर कार्यशाला का लाभ मिलेगा। अगले तीन महीनों में 100 छात्राओं के लिए समूह मार्गदर्शन सत्र आयोजित किए जायेंगे। नोकिया की 20 महिला लीडर्स ने प्रतिभाशाली छात्राओं के मार्गदर्शन के लिए स्वेच्छा से मेंटर बनने का निर्णय लिया है। नियमित चेक-इन और प्रतिक्रिया सत्र से यह सुनिश्चित किया जायेगा कि मेंटरशिप कार्यक्रम का अधिकाधिक लाभ छात्राओं को मिल सके। सचिव तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार श्री रघुराज माधव राजेन्द्रन ने कहाकि यह मेरे लिए गर्व का विषय है कि मैं इस मेंटरशिप कार्यक्रम का हिस्सा हूं, जो यूएन वीमन और नोकिया का संयुक्त प्रयास है, जिसका उद्देश्य स्ञ्जश्वरूक्षेत्रों में युवा महिलाओं को सशक्त बनाना और उन्हें कौशल प्रदान करना है। यह कार्यक्रम विभाग की 100 छात्राओं को 20 अनुभवी नोकिया महिला नेतृत्वकर्ताओं के माध्यम से मूल्यवान मार्गदर्शन प्रदान करेगा, जो उन्हें उनके कॅरियर के लिए आवश्यक तकनीकी कौशल और सॉफ्ट स्किल्स को विकसित करने में मदद करेगा। निदेशक, कौशल विकास श्रीमती हर्षिका सिंह ने कहा किहमारी युवा महिलाओं में आत्मविश्वास का निर्माण केवल कौशल सिखाने तक सीमित नहीं है, यह उनकी असीमित क्षमता में विश्वास जगाने और स्ञ्जश्वरूक्षेत्र में उनके कौशल को उन्नत करने के लिए एक सहयोगी वातावरण बनाने के बारे में है।

मंत्री श्री टेटवाल ने केंपस सिलेक्शन से चयनित प्रशिक्षणार्थियों को जॉब ऑफर लेटर वितरित किये

संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल्स पार्क के प्रशिक्षणार्थियों को डिग्री पूर्ण होने के पहले मिले जॉब

भोपाल कौशल विकास एवं रोजगार राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गौतम टेटवाल ने संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल्स पार्क के 7ह्लद्ध बैच के 70 प्रशिक्षणार्थियों को केंपस सिलेक्शन के जरिये कंपनी में सिलेक्शन होने पर जॉब ऑफर लेटर वितरित किए। मंत्री श्री टेटवाल ने प्रशिक्षणार्थियो को शुभकामनाएँ दीं और कहा कि आज मुझे इस बात की प्रसन्नता हो रही है कि यहाँ से अत्याधुनिक प्रशिक्षण प्राप्त कर युवा वर्ग प्रतिष्ठित कंपनी मे रोजगार प्राप्त कर ग्लोबल स्किल्स पार्क का नाम रोशन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मुझे विश्वास है कि यहाँ से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थी और अधिक क्षमतावान बन कर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का रोजगार देने वाले बनने का सपना पूर्ण करेंगे। जीएसपी के विद्यार्थी प्रदेश, देश और विश्व में मध्यप्रदेश का नाम रोशन करेंगे।

एसएसआर ग्लोबल स्किल्स पार्क भोपाल के प्रशिक्षणार्थियो के लिए आज का दिन बड़ा ही हर्षोल्लास से भरा रहा। एसएसआर ग्लोबल स्किल्स पार्क के प्रशिक्षणार्थियो के लिए संचालित कोर्स एडवांस्ड प्रिसिजन इंजीनियरिंग एक वर्षीय सर्टिफिकेशन कोर्स के 7th बैच के प्रशिक्षणार्थियो का आज जहाँ एक वर्षीय प्रशिक्षण पूर्ण हुआ वहीँ आज उनके हाथ में रिजल्ट आने के पहले ही उनके हाथ में कई राष्ट्रीय कंपनियों के जॉब ऑफर लेटर्स थे। लोबल स्किल पार्क, मध्यप्रदेश शासन का एक प्रतिस्थठित संस्थान है, यहाँ से प्रशिक्षण प्राप्त कर देश के युवा कौशलउन्मुख होकर, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कौशल भारत-कुशल भारत का सपना साकार कर रहे हैं । ग्लोबल स्किल्स पार्क के सीईओ श्री राम रामालिंगम ने बताया कि इस संस्था के 97 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों का प्लेसमेंट, कोर्स की उद्योगों को मांग और इस संस्था स्किल क्षेत्र की उपयोगिता को सिद्ध करती है। उल्लेखनीय है कि इस बैच के लिए जुलाई के दूसरे सप्ताह मे प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया गया था जिसमे कुल 11 कंपनियों जीबीएम नोएडा कोरटेक एनर्जी लि. अहमदाबाद, राघव ऐरोस्पेस मेन्युफेक्करिंग लि. हैदराबाद, हिन्दुस्तान इक्विपमेंट प्रा. लि. इंदौर, चेतन मेडिटेक प्रा.लि. अहमदाबाद, डीएनएच सेचेरोन इलेक्ट्रोड्स प्रा. लि. इंदौर, ओमनिटेक इंजीनियरिंग प्रा. लि. राजकोट, इन्सप्रोस इंजीनियर्स मण्डीदीप भोपाल, परिधि इंडस्ट्रीज प्रा. लि. भोपाल, नागपुर इंडस्ट्रीज प्रा. लि. भोपाल, ओमेगा रेंक बियरिंग्स प्रा. लि. भोपाल ने भाग लिया था। लगभग सभी कंपनियों ने अपने निर्धारित पैमाने से अधिक वेतन पर जीएसपी से प्रशिक्षित प्रशिक्षणार्थियों को जॉब दिये।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008